प्रेरितों के काम
परमेश्वर जो संसार को अपने हाथों में थामे रखता है
डॉ. डेविड प्लैट
6 फरवरी, 2011

परमेश्वर जो संसार को अपने हाथों में थामे रखता है
प्रेरितों के काम 9:32–12:25

यदि आपके पास बाइबल है तो मेरे साथ प्रेरितों के काम अध्याय 9 निकालें। एक ही पल में हम प्रेरितों के काम अध्याय 9 के अन्त में पहुँचने वाले हैं। मैं चाहता हूँ कि हम प्रेरितों के काम को पढ़ने की हमारी इच्छा को इस प्रकार व्यक्त करने के बारे में सोचें, न केवल हमारे जीवनों या हमारे पारिवारिक जीवनों में, परन्तु कलीसिया के रूप में हम कहें, "हम यहाँ हैं, प्रभु। ये रहा खाली चैक। चाहे आप हमारे भवन को बेचना चाहें या नहीं, चाहे हमारी कलीसिया के सारे कार्यक्रम को बदलें, जो भी हो। आप हमसे जो भी चाहते हैं, हम वही करेंगे। हम इस शहर में और पृथ्वी की छोर तक आप की महिमा चाहते हैं। इसलिए, चाहे जो भी हो।"

मैं और हमारे वैश्विक पासबान कुछ महीने पहले एक साथ दक्षिण–पूर्वी एशिया में, सुसमाचार से वंचित पृथ्वी के सबसे बड़े द्वीप पर एक साथ थे। उस द्वीप पर पाँच करोड़ लोग और पचास से अधिक जातियाँ हैं, जिनमें से अधिकाँश में कोई कलीसिया या मसीही नहीं है। और रूचिकर बात यह है कि उस द्वीप की एक जाति में अधिकतर लोग मसीही हैं। उसमें लाखों लोग हैं। मैं ने इस जाति के बारे में लिखा था। यह एक आश्चर्यजनक कहानी है। वर्षों पूर्व, इस जाति का सुसमाचार से कोई सम्पर्क नहीं था। एक बैपटिस्ट मिशनरी उनके पास आता है और इस अन्यजाति कबीले के अगुवों को सुसमाचार सुनाता है, और कबीले के अगुवे बैपटिस्ट मिशनरी युगल को मारकर खा जाते हैं।

वर्षों बाद, एक और मिशनरी आकर इन कबीलाई अगुवों को सुसमाचार सुनाता है, लेकिन इस बार उन्होंने सुना और उसे ग्रहण किया। उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया और पूरे कबीले में सुसमाचार सुनाया। लगभग पूरे कबीले ने मसीह पर विश्वास किया, परन्तु उससे बाद के वर्षों में, यह मसीही कबीला दुःखद रूप से अपने तक ही सीमित हो गया और अपने चारों ओर की सुसमाचार से वंचित जातियों के लिए कुछ भी नहीं कर रहा है। यह चौंकाने वाला था।

कलीसियाई भवन हैं। संस्थाओं के सम्मेलन होते हैं। 30 सेमिनारियाँ हैं, परन्तु इन दूसरी जातियों तक पहुँचने के लिए, इससे कहीं अधिक की जरूरत होगी। इस प्रक्रिया में उनका बहुत सा आराम छिन जाएगा। उदाहरण के लिए, उनके आस–पास रहने वाली इन जातियों में अधिकाँश मुसलमान हैं, और मुसलमान सूअर का माँस नहीं खाते हैं। वह उनके लिए अशुद्ध और घिनौना है। तो आप सोचेंगे, यदि सुसमाचार को मुसलमानों तक पहुँचाने के लिए उनके बीच की खाई को पाटना है तो उन्हें सूअर के माँस को खाना बन्द करना होगा, परन्तु उस तथाकथित मसीही जाति के एक व्यक्ति ने उस द्वीप पर हमारे एक सहभागी से कहा, "यदि कोई मुसलमान नरक में जाता है तो जाए लेकिन मैं सूअर का मांस खाना नहीं छोड़ सकता।"

अब, मैं इस जाति के प्रति अत्यधिक कठोर नहीं होना चाहता। यथार्थ यह है कि यदि इन लोगों को वास्तव में अपने आस–पास की इन जातियों के बीच सुसमाचार को सुनाना है, तो यह खर्चीला होगा। इस द्वीप के कुछ राज्य शरीया कानून को मानते हैं, जो मुसलमानों का राष्ट्रीय कानून है। उन क्षेत्रों में सुसमाचार सुनाने का मतलब है निश्चित रूप से कारागृह या मौत।

इसलिए, सुसमाचार से वंचित जातियों से घिरी हुई यह जाति चुपचाप बैठी है, और उनके लिए कुछ नहीं कर रही है। द्वीप पर हमारे सहभागी ने कहा; उसने मुझ से और हमारे वैश्विक पासबान से यह कथन कहा। उसने कहा, "भाइयो, उनके पास कलीसिया का सारा साजो–सामान है, लेकिन मसीह का दिल पूरी तरह से गायब है।" क्या यह संभव है? क्या यह वास्तव में भवनों और सेमिनारियों और इन सारी वस्तुओं जैसे कलीसिया के पूरे साजो–सामान के बावजूद संसार के लोगों के लिए मसीह के दिल को समझने में चूक जाना संभव है? हाँ, यह संभव है।

यह इस संसार भर के लोगों के लिए संभव है, और मुझे पता है कि हम यहाँ सुसमाचार से वंचित लोगों के बारे में बहुत बातें करते हैं। यह कोई अनजाना शब्द नहीं है। हम सुसमाचार से वंचित लोगों के बारे में बहुत बातें करते हैं, परन्तु फिर भी, यदि हम ईमानदार हैं, तो मुझे लगता है कि हमारे बीच में कुछ या शायद बहुत से ऐसे लोग हैं, जिनके दिलों पर सुसमाचार से वंचित लोगों के बारे में सुनने पर कोई असर नहीं होता है। हमारा दिल उन 6,000 जातियों की सुसमाचार की आवश्यकता के लिए भारी नहीं होता है, जिन्होंने सुसमाचार को कभी सुना ही नहीं है। उसके बारे में सुनने के बाद भी हम ठण्डे और अविचलित रह सकते हैं। हम सबके अन्दर व्यक्तिगत आराम से चिपके रहने की प्रवृत्ति है; हम सब संभावित कीमत को चुकाने से बचना चाहते हैं; हम मसीह के हृदय को अनदेखा करके कलीसिया के साजो–सामान को अपनाना चाहते हैं।

इसलिए, आज हम एक ऐसे पद को देखने जा रहे हैं जहाँ कलीसिया के इतिहास में परमेश्वर ने एक प्रमुख पल लिया और वह अपने लोगों के दिलों तक पहुँचा, और उन्हें उथल–पुथल कर दिया। परमेश्वर ने उनके दिलों में कुछ किया जिससे संसार के लोगों के प्रति उनका नजरिया एकदम बदल गया। जब हम इस पद को पढ़ते हैं, तो मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर हम सबके साथ भी वैसा ही करे। ताकि जो लोग ऐसा कहते हैं कि, "हाँ, संसार की 6,000 सुसमाचार से वंचित जातियों तक सुसमाचार को पहुँचाने की आवश्यकता ने मुझे जकड़ लिया है," उनके लिए यह और भी गहरा हो जाए। फिर, हम में से बहुत से लोगों के मन में, जो अभी तक वहाँ नहीं पहुँचे हैं और जिनके दिलों में वह बोझ नहीं है, आज वचन की सामर्थ के द्वारा उनके हृदयों की गहराई में भी उस आवश्यकता का बोझ उत्पन्न हो जाए।

वास्तविकता यह है कि हम पूरे दिन यह गा सकते हैं, "जो भी तू चाहे, हम वही करेंगे," लेकिन जब तक हमारे दिल इसकी जकड़ में न आएँ तब तक हम वह सब नहीं करेंगे जो वह चाहता है। हम परम्पराओं को नहीं छोड़ेंगे। हम आराम को नहीं छोड़ेंगे, और हम यह नहीं कहेंगे, "ठीक है, आओ हम वही करते हैं जो वह हमसे चाहता है। आओ हम वह सब करें, चाहे उसकी कीमत कुछ भी हो; चाहे हमें किसी भी आराम को क्यों न छोड़ना पड़े।" जब तक हमारे हृदय बदलते नहीं हैं, हम ये कदम नहीं उठाएँगे।

अतः, मैं चाहता हूँ कि हम इस पद में होकर चलें, और हमें बहुत कुछ पूरा करना है। इसे हम इस प्रकार से करेंगे। आपने पहले ही मुझ से सुन लिया है कि यह पुस्तक थोड़ी कठिन है क्योंकि केवल प्रेरितों के काम की पुस्तक में कुछ होता है तो उसका मतलब यह नहीं है कि उस समय के बाद से कलीसिया के लिए भी जरूरी है कि वह हमेशा उस कार्य को करे और उसी तरह से करे।

उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 2 में, पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा उतरता है और एकत्रित सब लोग अन्य–अन्य भाषाओं में बोलने लगते हैं। हम उस परिच्छेद को पढ़कर यह नहीं कहते हैं, "हाँ, हर एक में पवित्र आत्मा है। स्पष्टतः, मुझे भी अन्य भाषा बोलने में समर्थ होना चाहिए। इसलिए, चलो देखते हैं कि हमारे बीच में से कौन अन्य भाषाओं में बोलता है, किस में पवित्र आत्मा है।" हम उस परिच्छेद को इस प्रकार नहीं समझेंगे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में उस तरह के और भी परिच्छेद हैं। यदि हमारी सोच यह होती कि प्रेरितों के काम में होने वाली हर एक बात हर समय के लिए यह बताती है कि क्या होना चाहिए,

तो हम प्रेरितों काम की पुस्तक से बहुत ही दुविधा से भरे हुए मसीहियों के रूप में बाहर निकलते, विशेषतः बात जब पवित्र आत्मा के कार्य की हो। इसलिए, हमें सावधान रहने की जरूरत है।

एक दिन मैं सेवकाई में मेरे गुरू, एक पासबान से बात कर रहा था, और मैं ने उन्हें बताया कि हम प्रेरितों के काम से प्रचार कर रहे थे। उन्होंने कहा, "प्रचार के लिए पूरी बाइबल में वह सबसे कठिन पुस्तक है।" अतः, मैं कोई ऐसी गलती नहीं करना चाहता जो वास्तव में आसानी से हो जाती हैं।

मैं चाहता हूँ कि हम इस पद को पढ़ें। यह थोड़ा बड़ा पद है। मैं चाहता हूँ कि हम इसे पूरा पढ़ें और बीच में रूककर यह समझें कि क्या हो रहा है। मैं रूककर, पीछे हटते हुए यह कहने की परीक्षा का विरोध करूंगा कि, "यहाँ इसका मतलब यह है।" यह एक प्रकार से जंगल में चलने के समान है, परन्तु हम पद में ही रहेंगे और देखेंगे कि इसका क्या मतलब है, और यह क्या कह रहा है, और कुछ अध्यायों तक जंगल में चलने के बाद एक कदम पीछे हटते हुए हम कहेंगे, "ठीक है, पवित्रशास्त्र जो कहता है उसके प्रकाश में, हमारे जीवनों के लिए इसका क्या मतलब है?"

आप देखेंगे, दो चमत्कार, दो परिवर्तन, दो कलीसियाएँ, दो शिष्य, और दो ईश्वर। हम उन सबके बीच से बहुत तेजी से आगे बढ़ेंगे, और फिर हम अपना अधिकाँश समय वहाँ व्यतीत करेंगे। और अन्त में, हम दो निष्कर्षों को देखेंगे। हम उन्हीं दो निष्कर्षों की ओर बढ़ रहे हैं।

दो चमत्कार ...

प्रेरितों के काम 9:32. हम यहीं से शुरू करेंगे। प्रेरितों के काम 9:32, यह शाऊल के मसीह में आने के ठीक बाद है। पतरस दृश्य में आता है।

> *और ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ, उन पवित्र लोगों के पास भी पहुँचा, जो लुद्दा में रहते थे। वहाँ उसे ऐनियास नाम झोले का मारा हुआ एक मनुष्य मिला, जो आठ वर्ष से खाट पर पड़ा था। पतरस ने उस से कहा; हे ऐनियास! यीशु मसीह तुझे चंगा करता है; उठ, अपना बिछौना बिछा; तब वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ। और लुद्दा और शारोन के सब रहने वाले उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे। याफा में तबीता अर्थात् दोरकास नाम एक विश्वासिनी रहती थी, वह बहुतेरे भले भले काम और दान किया करती थी। उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर मर गई; और उन्हों ने उसे नहलाकर अटारी पर रख दिया। और इसलिए कि लुद्दा याफा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहाँ है दो मनुष्य भेजकर उस से विनती की कि हमारे पास आने में देर न कर। तब पतरस उठकर उन के साथ हो लिया, और जब पहुँच गया, तो वे उसे उस अटारी पर ले गए; और सब विधवाएँ रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुईः और जो कुरते और कपड़े दोरकास ने उन के साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगीं। तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की; और लोथ की ओर देखकर कहा; हे तबीता उठः तब उस ने अपनी आँखें खोल दी; और पतरस को देखकर उठ बैठी। उस ने हाथ देकर उसे उठाया और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित और जागृत दिखा दिया। यह बात सारे याफा मे फैल गईः और बहुतेरों ने प्रभु पर विश्वास किया। और पतरस याफा में शमौन नाम किसी चमड़े के धन्धा करने वाले के यहाँ बहुत दिन तक रहा।*

ऐनियासः बीमारी पर विजय।

यहाँ हम क्या देखते हैं? ऐनियास की कहानी में हम बीमारी पर विजय को देखते हैं। ऐनियास आठ वर्षों से लकवे का मारा हुआ खाट पर पड़ा था। पतरस आकर कहता है, "उठ," और वह उठ खड़ा होता है। बीमारी पर विजय। और, ऐसा ही होता है। अब, उदाहरण के लिए, यही वह बिन्दू है जहाँ पर रूककर हम यह नहीं कहेंगे कि, "जो कोई बीमार है उसे सामने आने की जरूरत है। कोई उन पर चंगाई की घोषणा करेगा और वे चंगाई पाकर चले जाएँगे।" यह परिच्छेद हमें इस बात को नहीं दिखाता है। इस परिच्छेद का लक्ष्य हमें यह दिखाना है कि यीशु के पास रोगों के ऊपर अधिकार और सामर्थ है। उसे रोगों पर अधिकार है, और वह रोगों पर विजयी है। इसे आप ऐनियास में देखते हैं।

दोरकासः मृत्यु पर विजय।

फिर, दोरकास में आप मृत्यु पर विजय को देखते हैं। वह तबीता भी कहलाती है, इसलिए हम उसी नाम का प्रयोग करेंगे। वह मर जाती है। उसके शव को नहलाकर दफनाने के लिए तैयार किया जाता है और हर कोई रो रहा है। पतरस को बुलाया जाता है। वह अन्दर आता है और सब लोगों को कमरे से बाहर जाने के लिए कहता है। वह कहता है, "हे तबीता, उठ," और वह उठ जाती है। मृत्यु पर विजय। वह जी उठती है।

अब, इन दोनों कहानियों में, मैं चाहता हूँ कि आप अपने लोगों में कार्यरत मसीह की उपस्थिति को देखें। आप इन कहानियों को पढ़ते हैं, और वे लगभग वैसी ही हैं जैसी कहानियाँ हम यीशु के बारे में सुसमाचारों में पढ़ते हैं। यूहन्ना 5 में, आप एक लकवे के मारे हुए को देखते हैं। यीशु उसके पास आकर कहते हैं, "उठ, और चल फिर।" और वह चलने लगता है। मरकुस 5:41 में, याईर की बेटी मर गई है। कमरे में सब लोग विलाप कर रहे हैं। यीशु अन्दर आकर कहते हैं, "कमरे से निकल जाओ।" फिर वह इन शब्दों को कहते हैं, "तलीता कूमी।" इन्हीं शब्दों को पतरस भी यहाँ कहता है, सिवाय इसके कि "तलीता" की जगह यहाँ "तबीता" है। वह इन्हीं शब्दों को कहता है, और मरकुस 5 में, लड़की मृतकों में से जी उठती है।

अतः, यहाँ बिल्कुल वही हो रहा है, और हम मसीह की सामर्थ को और मसीह की उपस्थिति को उसके लोगों के द्वारा उसके लोगों के बीच में कार्य करते हुए देखते हैं। अपने लोगों में कार्यरत मसीह की उपस्थिति को देखें, और मसीह के राज्य को उसके लोगों के द्वारा बढ़ते हुए देखें। इन दो कहानियों का परिणाम क्या था? प्रेरितों के काम 9:35 कहता है, *"उसे देखकर वे प्रभु की ओर फिरे।"* ऐनियास चंगा हुआ और लोगों ने प्रभु पर विश्वास किया।

जब तबीता को जिन्दा किया गया, पद 42 में, *"बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया।"* यीशु मसीह की सेवकाई में चिन्हों और चमत्कारों का उद्देश्य यही था। वे परमेश्वर के राज्य को प्रकट करते थे। राजा यहाँ था और यह उसके राज्य का प्रदर्शन था। और, यहाँ पर हम बिल्कुल यही देखते हैं। ये चिन्ह और चमत्कार केवल ऐसे ही नहीं किए गए हैं। ये सुसमाचार के प्रसार के लिए, परमेश्वर के राज्य का प्रदर्शन करने के लिए हैं। अतः, ये दो चमत्कार थे।

दो परिवर्तन ...

अब, हम आगे बढ़ते हैं। आगे क्या होता है? दो परिवर्तनों की कहानी। आइए हम पढ़ते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक बहुत अच्छी है। यह बहुत गहरी है। अब, यह थोड़ा भारी परिच्छेद है जो हम पढ़ने जा रहे हैं, पतरस और कुरनेलियुस की कहानी। इन विवरणों को ध्यान से देखें।

> *कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का एक मनुष्य था, जो इतालियानी नामक पलटन का सूबेदार था। वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को*

बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। उस ने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा, कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास भीतर आकर कहता है; हे कुरनेलियुस। उस ने उसे ध्यान से देखा; और डरकर कहा; हे प्रभु क्या है? उस ने उससे कहा, तेरी प्रार्थनाएँ और तेरे दान स्मरण के लिए परमेश्वर के सामने पहुँचे हैं। और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह शमौन चमड़े के धन्धा करने वाले के यहाँ पाहुन है, जिस का घर समुद्र के किनारे है। जब वह स्वर्गदूत जिस ने उस से बातें की थी चला गया, तो उस ने दो सेवक, और जो उसके पास उपस्थित रहा करते थे उन में से एक भक्त सिपाही को बुलाया। और उन्हें सब बातें बताकर याफा को भेजा।

अब पतरस दृश्य में आता है।

दूसरे दिन, जब वे चलते चलते नगर के पास पहुँचे, तो दो पहर के निकट पतरस कोठे पर प्रार्थना करने चढ़ा। और उसे भूख लगी, और कुछ खाना चाहता था; परन्तु जब वे तैयार कर रहे थे, तो वह बेसुध हो गया। और उस ने देखा, कि आकाश खुल गया; और एक पात्र बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकता हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है जिस में पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगने वाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। और उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, कि हे पतरस उठ, मार और खा। परन्तु पतरस ने कहा, नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है। फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया, कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह। तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरन्त वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया।

जब पतरस अपने मन में दुविधा में था, कि यह दर्शन जो मैं ने देखा वह क्या हो सकता है, तो देखो, वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर का पता लगाकर द्वार पर आ खड़े हुए। और पुकारकर पूछने लगे, क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहीं पाहुन है? पतरस जो उस दर्शन पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने उस से कहा, देख, तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। सो उठकर नीचे जा, और बेखटके उन के साथ हो ले; क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है। तब पतरस ने उतरकर उन मनुष्यों से कहा; देखो, जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह मैं ही हूँ; तुम्हारे आने का क्या कारण है? उन्होंने कहा; कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरने वाला और सारी यहूदी जाति में सुनाम मनुष्य है, उस ने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह निर्देश पाया है, कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से वचन सुने। तब उस ने उन्हें भीतर बुलाकर उन की पहुनाई की।

और दूसरे दिन, वह उनके साथ गया; और याफा के भाइयों में से कई उसके साथ हो लिए। दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुँचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठे करके उन की बाट जोह रहा था। जब पतरस भीतर आ रहा था, तो कुरनेलियुस ने उस से भेंट की, और उसके पाँवों पर गिरकर उसे प्रणाम किया। परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा, खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूँ। और उसके साथ बातचीत करता हुआ भीतर गया, और बहुत से लोगों को इकट्ठे देखकर उनसे कहा, तुम जानते हो, कि अन्यजाति की संगति करना या उसके यहाँ जाना यहूदी के लिये अधर्म है, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है, कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूँ। इसीलिए मैं जब बुलाया गया; तो बिना कुछ कहे चला आया: अब मैं पूछता हूँ कि मुझे किस काम के लिए बुलाया गया है?

कुरनेलियुस ने कहा; कि इस घड़ी पूरे चार दिन हुए, कि मैं अपने घर में तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था; कि देखो, एक पुरूष चमकीला वस्त्र पहने हुए, मेरे सामने आ खड़ा हुआ। और कहने लगा, हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई, और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए गए हैं। इसलिए किसी को याफा भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला; वह समुद्र के किनारे शमौन चमड़े के धन्धा करने वाले के घर में पाहुन है। तब मैं ने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तू ने भला किया, जो आ गया: अब हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें।

तब पतरस ने मुँह खोलकर कहा; अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है। जो वचन उस ने इस्राएलियों के पास भेजा, जब उस ने यीशु मसीह के द्वारा (जो सब का प्रभु है) शान्ति का सुसमाचार सुनाया। वह बात तुम जानते हो जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आरम्भ होकर सारे यहूदिया में फैल गई। कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी का पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया: वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। और हम उन सब कामों के गवाह हैं; जो उस ने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए, और उन्हों ने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला। उस को परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रकट भी कर दिया है। सब लोगों को नहीं वरन् उन गवाहों पर जिन्हें परमेश्वर ने पहले से चुन लिया था, अर्थात् हमको जिन्हों ने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया पीया। और उस ने हमें आज्ञा दी, कि लोगों में प्रचार करो; और गवाही दो, कि यह वही है; जिसे परमेश्वर ने जीवतों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है। उस की सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।

पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुनने वालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उण्डेला गया है। क्योंकि उन्हों ने उन्हें भाँति भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा; क्या कोई जल की रोक कर सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएँ, जिन्हों ने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है? और उस ने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए: तब उन्होंने उस से विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे।

और प्रेरितों और भाइयों ने जो यहूदिया में थे सुना, कि अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन मान लिया है। और जब पतरस यरूशलेम में आया, तो खतना किए हुए लोग उस से वाद–विवाद करने लगे कि तू ने खतनारहित लोगों के यहाँ जाकर उनके साथ खाया। तब पतरस ने उन्हें आरम्भ से क्रमानुसार कह सुनाया; कि मैं याफा नगर में प्रार्थना कर रहा था, और बेसुध होकर एक दर्शन देखा, कि एक पात्र, बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ, आकाश से उतरकर मेरे पास आया। जब मैं ने उस पर ध्यान किया, तो पृथ्वी के चौपाए और वनपशु और रेंगने वाले जन्तु और आकाश के पक्षी देखे। और यह शब्द भी सुना कि हे पतरस उठ, मार और खा। मैं ने कहा, नहीं प्रभु, नहीं, क्योंकि कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मेरे मुँह में कभी नहीं गई। इसके उत्तर में आकाश से दूसरी बार शब्द हुआ, कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध मत कह। तीन बार ऐसा ही हुआ; तब सब कुछ फिर आकाश पर खींच लिया गया। और देखो, तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर पर जिस में हम थे, आ खड़े हुए। तब

आत्मा ने मुझ से उन के साथ बेखटके हो लेने को कहा, और ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिए; और हम उस मनुष्य के घर में गए। और उस ने बताया, कि मैं ने एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़ा देखा, जिस ने मुझ से कहा, कि याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिन के द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा। जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था। तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया; जो उस ने कहा; कि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे। सो जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता? यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है।

कुरनेलियुसः मसीह की ओर परिवर्तन।

यहाँ दो परिवर्तन हैं। पहला, कुरनेलियुस का मसीह की ओर परिवर्तन। मैं चाहता हूँ हम यह देखें कि यह कितना ऐतिहासिक है। हमारी जानकारी में यह पहला अन्यजाति है जो विश्वासी बनता है। जातियों में से उद्धार पाने वाला पहला अन्यजाति, गैर–यहूदी व्यक्ति। इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा से बाहर का पहला व्यक्ति, नई वाचा के परमेश्वर के लोगों के द्वारा मसीह में लाया जाता है।

अब, कुरनेलियुस के बारे में हम क्या जानते हैं? वह एक सूबेदार है। वह एक अन्यजाति है, एक सूबेदार है। रोमी सेना का अगुवा है, और परमेश्वर से डरने वाला है। अब, इसका क्या मतलब है? वह निरन्तर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। वह परमेश्वर का भय मानता था। इसका क्या मतलब है? इस परिच्छेद को लेकर कुछ लोग कहते हैं, "पतरस के आने से पहले ही कुरनेलियुस परमेश्वर के सामने सही था, वह परमेश्वर के सामने धर्मी था।" यह जानना महत्वपूर्ण है कि पतरस के आने से पहले वह परमेश्वर के सामने धर्मी था या नहीं। यदि वह धर्मी था, तो इसे मानने वाले लोग एक कदम आगे बढ़कर यह कहते हैं कि, "संसार भर में, दूसरे देशों में, दूसरी जातियों में ऐसे बहुत से लोग हैं जो परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर के सामने धर्मी हैं, लेकिन उन्होंने कभी सुसमाचार को नहीं सुना है।" मसीही होने का दावा करने वाले ऐसे कुछ या बहुत से लोग हैं जिनका कहना है कि संसार भर में दूसरे देशों और दूसरी जातियों में ऐसे लोग हैं जिन्होंने शायद सुसमाचार कभी नहीं सुना होगा, लेकिन वे परमेश्वर के सामने धर्मी हैं, क्योंकि वे कुरनेलियुस के समान ही परमेश्वर को खोज रहे हैं।

अतः, हमें यह सवाल पूछने की जरूरत है, "क्या पतरस के आने से पहले, कुरनेलियुस वास्तव में परमेश्वर के सामने सही था, परमेश्वर की नजरों में धर्मी था?" इसके बारे में सोचें। यदि पतरस के आकर सुसमाचार को सुनाने से पहले परमेश्वर के सामने वह धर्मी था, तो प्रेरितों के काम 2 में पतरस को भक्त यहूदियों की भीड़ के सम्मुख खड़े होकर सुसमाचार का प्रचार करने की क्या जरूरत थी? यदि परमेश्वर का भय मानने और यहूदी मत के प्रति समर्पित होने और दान एवं भेंट देने और आराधनालय में जाने मात्र से ही वे परमेश्वर के सामने धर्मी होते तो उनमें से एक भी व्यक्ति को मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए सुसमाचार को सुनने की जरूरत नहीं होती।

लेकिन, उन्होंने सुना, इसीलिए जब आप प्रेरितों के काम 10:43 पर आते हैं तो पतरस मसीह के बारे में बताते हुए यह सन्देश लाता है, *"उसकी,"* मसीह की, *"सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा,"* जो भी मसीह पर विश्वास करेगा *"उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।"* आपको पापों की क्षमा कैसे मिलती है? उसके नाम के द्वारा। किसके नाम के द्वारा? यीशु मसीह के नाम के द्वारा। मसीह के नाम के द्वारा आप को पापों की क्षमा मिलती है। कुरनेलियुस ने यीशु के बारे में नहीं सुना था।

इसलिए, उसे पापों की क्षमा नहीं मिल सकती थी। नीचे प्रेरितों के काम 11:13–14 को देखें। यहाँ पतरस उस बात को याद कर रहा है जब पद 13 में एक स्वर्गदूत ने कुरनेलियुस से बात की और कहा, *"याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले।"* पद 14 को सुनें, *"वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिन के द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा।"* यदि उस सन्देश के द्वारा कुरनेलियुस को उद्धार मिलना था तो इसका मतलब है कि कुरनेलियुस ने अभी उद्धार नहीं पाया था। इसीलिए जब आप इस परिच्छेद के अन्त में प्रेरितों के काम 11:18 पर आते हैं, तो इन सबके बाद हम देखते हैं कि अब परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है।

अतः, कुरनेलियुस ने पहले से उद्धार नहीं पाया था और उसे कुछ अतिरिक्त जानकारी की जरूरत थी। उसने यीशु का नाम नहीं सुना था, और उद्धार पाने के लिए उसे यीशु का नाम सुनने की जरूरत थी। मैं चाहता हूँ आप देखें कि इसे करने के लिए परमेश्वर ने क्या किया, क्योंकि यह सब परमेश्वर ने ही किया है। परमेश्वर अपने लोगों को प्रेरणा देता है। आप इसके विवरणों को इस कहानी में देखते हैं।

परमेश्वर कुरनेलियुस को एक दर्शन देता है। एक व्यक्ति है जिसने कभी सुसमाचार नहीं सुना है। परमेश्वर कुछ लोगों को भेजने के लिए उसके दिल में कार्य करता है। जब लोगों को भेजा जा रहा है, परमेश्वर पतरस से कहता है, "तेरे लिए एक दर्शन है।" वह उसे एक दर्शन दिखाता है। शुद्ध और अशुद्ध प्राणी जिनके बारे में हम थोड़ी ही देर में बात करेंगे, इसे परमेश्वर करता है ताकि इन लोगों के पहुँचने पर पतरस उन्हें स्वीकार करे और परमेश्वर ही इसे करता है ताकि पतरस इस घर में आ सके।

अब, इसकी कल्पना करें। पतरस इस घर में आता है। घर लोगों से भरा है, और वे कह रहे हैं, "क्या तुम हमें सुसमाचार सुनाओगे?" ये बहुत अच्छे श्रोता हैं। मुझे याद है एक बार हेदर और मैं पूर्वी एशिया में सुसमाचार से वंचित लोगों के समूहों के बीच में थे और संयोग से हमारी मुलाकात एक व्यक्ति से हुई, जिसे एक बाइबल मिल थी। उसके पास एक बाइबल थी और उसने हमें अपने घर बुलाया। हम उसके घर गए। उसने कहा, "कृपया बैठिए।" हम उसकी चारपाई पर बैठे। वह बाइबल को हमारे सामने मेज पर रखता है, उसे खोलता है और हमारी तरफ देखकर कहता है, "क्या तुम मुझे बता सकते हो कि इस पुस्तक के आधार पर एक उपयोगी जीवन कैसे बिताया जा सकता है?" "हाँ, जरूर।"

यह सब परमेश्वर ने किया था। जो हो रहा है उसके लिए उसी ने इन सारी बातों को मिलाया है। परमेश्वर अपने लोगों को प्रेरणा देता है। फिर, परमेश्वर अपने सुसमाचार को सामर्थी बनाता है। प्रचार किए जाने वाले सुसमाचार को देखें। यह स्पष्ट और सरल है। मसीह का जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान। पद 38, मसीह का जीवन, *"परमेश्वर ने यीशु नासरी का पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक कियाः वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।"* यह मसीह का जीवन है। पद 39, मसीह की मृत्यु। *"उन्हों ने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला।"* फिर, मसीह का पुनरूत्थान, पद 40, *"उस को परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया।"* पद 41 के अन्त में, वह मरे हुओं में से जी उठा। मसीह का जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान। इसे देखें। पतरस अन्दर आता है, वह न चुटकुले सुनाता है, न मजाकिया कहानियाँ, और न ही मनोरंजक बातें; केवल मसीह का जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान, और वे उद्धार पाते हैं। कोई शब्दों का खेल, या वाक्पटुता नहीं, केवल सुसमाचार।

परमेश्वर इस सुसमाचार को सामर्थी बनाता है और लोगों को खींचता है। वह क्या करता है? वह अपना आत्मा भेजता है। वह अपने लोगों को प्रेरणा देता है, अपने सुसमाचार को सामर्थी बनाता है, और अपना आत्मा भेजता है। परिणाम यह है कि पतरस के बोलते समय ही सब सुनने वालों पर पवित्र आत्मा उतरता है। इसके बाद जो होता है उसे कुछ लोग "अन्यजातियों का पिन्तेकुस्त" कहते हैं क्योंकि यह ठीक वैसा ही है जैसा हम प्रेरितों के काम 2 में देखते हैं जब पवित्र आत्मा उन यहूदी मसीहियों पर उतरा था और वे सब

अन्य भाषाओं में बोलने लगे थे। आत्मा अन्यजाति मसीहियों पर उतरता है। आपको इसे समझना है। पहली बार अन्यजाति लोग सुसमाचार पर विश्वास कर रहे हैं।

आत्मा उतरता है और उसके कारण कलीसिया में यहूदी अगुवे एक ऐतिहासिक कथन कहते हैं। जब आप 11:18 पर आते हैं, कलीसिया में यहूदी मसीही अगुवे कहते हैं, "वाह, परमेश्वर ने जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है।" उसने बिल्कुल यही किया था। परमेश्वर ने इसे किया था। परमेश्वर ने अपने लोगों को प्रेरणा दी, सुसमाचार को सामर्थी बनाया, और आत्मा को भेजा। अन्यजातियों में सुसमाचार को फैलाने के लिए परमेश्वर ने ही यह सब किया। अतः, यह पहला परिवर्तन है, कुरनेलियुस का परिवर्तन; यहूदी मत से बाहर, जातियों के बीच में से पहला विश्वासी।

सामर्थः कलीसिया का परिवर्तन।
परन्तु, यहाँ एक और परिवर्तन है। उसी अर्थ में एक परिवर्तन नहीं, उद्धार जैसा परिवर्तन नहीं, लेकिन फिर भी एक परिवर्तन है। इसे हम पतरस में देखते हैं, कलीसिया का परिवर्तन। अब, इसकी कल्पना करना हमारे लिए कठिन है क्योंकि हम इस पद को उस समय यहूदियों और अन्यजातियों के बीच विभाजन की भावना के साथ नहीं पढ़ते हैं, परन्तु सम्पूर्ण पुराने नियम में हम देखते हैं कि परमेश्वर के लोगों के लिए व्यवस्था दी गई थी कि उन्हें अपने चारों ओर की अन्यजातियों, उनके धर्म और उनके देवताओं से अलग तथा शुद्ध रहना था। परमेश्वर ने इन्हें निर्धारित किया था, परन्तु साथ ही परमेश्वर ने यह भी कहा था, "मैं तुझे आशीष दूँगा, और तू सारी जातियों के लिए आशीष का मूल होगा।"

पिछले वर्ष पुराने नियम का अध्ययन करते समय हमने देखा था कि परमेश्वर के लोगों ने जातियों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को अनदेखा कर दिया था। फिर, उन्होंने पहले से विद्यमान नियमों के ऊपर और भी नियमों का ढ़ेर लगा दिया, और आप देखते हैं कि कुरनेलियुस के घर में आने पर प्रेरितों के काम 10:28 में पतरस कहता है, "यह अधर्म है," *"अन्यजाति की संगति करना या उसके यहाँ जाना यहूदी के लिये अधर्म है।"* इसे महसूस करें। "तुम्हारे साथ इस घर में रहना मेरे लिए अधर्म है।" पतरस कहता है, "खाने की बात तो बहुत दूर है।" यहूदियों के लिए अन्यजातियों की संपत्ति को खरीदना भी अधर्म था। वह संपत्ति अशुद्ध मानी जाती थी। यहूदी दाईयों को आज्ञा दी गई थी कि वे प्रसव के समय अन्यजाति स्त्रियों की सहायता करके पृथ्वी पर अन्यजाति कचरे को फैलाने में सहायता न करें। यह एक गम्भीर विभाजन था, बड़ा विभाजन।

यहाँ परमेश्वर पतरस से आरम्भ करके गहरे बैठे हुए पूर्वाग्रह से दैवीय खुलेपन की ओर परिवर्तन लाता है। यही वो पल था जब पतरस के लिए सब कुछ बदल गया। वह उन जीवों का दर्शन देखता है जिन्हें वह अशुद्ध कहता है, और परमेश्वर कहता है, "जिन्हें तू टाल रहा है उन्हें मैं स्वीकृत कहता हूँ।" परमेश्वर पतरस से कह रहा है, "मैं जो कर रहा हूँ उसके बारे में तुझे खुले मन का होने की जरूरत है।" यहाँ हृदय बदलने लगता है, "तुझे उसके प्रति खुला मन रखने की जरूरत है जिसे मैं तेरे चारों ओर की जातियों और देशों में करने जा रहा हूँ।"

यह वास्तव में रूचिकर है जब आप इसके बारे में सोचते हैं। इस दर्शन के समय पतरस किस नगर में है? किसी को याद है? प्रेरितों के काम 9 के अन्त में पद 43 को देखें, लिखा है, *"वह शमौन नाम किसी चमड़े के धन्धा करने वाले के यहाँ बहुत दिन तक रहा।"* वह याफा में रहा।

आपको याद होगा पुराने नियम में योना नामक एक भविष्यद्वक्ता जिसे परमेश्वर एक अन्यजाति देश में जाने के लिए कहता है, और योना कहता है, "नहीं," और वह याफा नामक नगर की ओर जाता है और वहाँ से विपरीत दिशा में तरसुस की ओर जाने वाले जहाज पर चढ़ जाता है। मैं सोचता हूँ कि जब यह होता है तो क्या पतरस के मन में भी आया होगा कि, "मुझे भाग जाना चाहिए। मुझे इन अन्यजातियों के पास जाने

की जरूरत नहीं है।" लेकिन फिर सोचा, "नहीं, मैं ने सुना है कि भागने वालों के साथ क्या होता है। ये लोग द्वार खटखटा रहे हैं, और मुझे कम से कम उठकर उन्हें अन्दर लाना चाहिए।" और वह उन्हें अन्दर बुलाता है। यह दैवीय खुलापन है।

वह उनके साथ जाता है, अब, स्वार्थी घमण्ड से निःस्वार्थ नम्रता की ओर। पतरस कुरनेलियुस के घर पहुँचता है, और कुरनेलियुस चरणों पर गिरकर पतरस को दण्डवत् करता है। अब, एक यहूदी मछुवारे के सामने अन्यजाति सूबेदार का चरणों पर गिरकर दण्डवत् करना, यदि पतरस में कोई घमण्ड होता तो वह पूरी तरह से इसका आनन्द लेता, परन्तु इसके विपरीत, सब कुछ बदल चुका है। उसने कहा, "उठ, खड़ा हो। हम एक ही जैसे हैं।" यह बहुत बड़ी बात है, निःस्वार्थ नम्रता।

वह घर में जाता है और कहता है, "यह अधर्म है, लेकिन मैं अन्दर जा रहा हूँ।" फिर, देखें क्या होता है। नीचे प्रेरितों के काम 10:48 को देखें। उनके मसीह में आने और मसीह पर विश्वास करने के बाद लिखा है, *"तब उन्होंने उस से विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे।"* और पतरस रूक गया। पतरस वहीं रहा। वह उनके साथ घर में है। आप प्रेरितों के काम 11:3 पर आते हैं, और यहूदी अगुवे कह रहे हैं, "तू ने खतनारहित लोगों के यहाँ जाकर उनके साथ खाया।"

यह बहुत बड़ी बात हैः पारम्परिक पक्षपात से सुसमाचार की संगति की ओर। ये लोग जिनके बीच बहुत बड़ी खाई हुआ करती थी, अब पतरस उन्हीं के साथ जुड़ा हुआ है। क्यों? क्योंकि जब आप प्रेरितों के काम 11:17 पर आते हैं तो पतरस इन अगुवों से कहता है, "सो जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता? सुसमाचार का उन पर वही प्रभाव हुआ जो हम पर हुआ था। इसका मतलब है कि अब हम एक साथ हैं, यहूदी और अन्यजाति साथ–साथ हैं।"

यह कलीसिया का ऐतिहासिक पल था, जहाँ कलीसिया ने सांस्कृतिक पृथक्ता से वैश्विक भागीदारी की ओर कदम बढ़ाया। मेरी आशा है कि आपने इसे समझ लिया है। एक पल पतरस ने अपने चारों ओर की अन्यजातियों की उस भीड़ से अपने कान फेर लिए थे, जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना था। वह उन पर ध्यान ही नहीं दे रहा है। अगले दिन, वह खुलकर सोचता है कि जातियों की उस भीड़ में सुसमाचार को कैसे सुनाया जा सकता है। क्या आपने उस हृदय परिवर्तन को देखा जो अभी हुआ है; हृदय परिवर्तन जो हमारे जीवन में भी होना जरूरी है?

दो कलीसियाएँ ...

कलीसिया में यह बहुत बड़ा पल है। प्रेरितों के काम 11:18 के बाद से, इस बिन्दू से लेकर प्रेरितों के काम की पुस्तक में सब कुछ अलग है। पद 19 को देखें।

> *सो जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तितर बितर हो गए थे, वे फिरते फिरते फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुँचे; परन्तु यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे। परन्तु उन में से कितने कुप्रुसी और कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु के सुसमाचार की बातें सुनाने लगे।" "...को भी..."* (पद 19 में वे केवल यहूदियों को सुसमाचार सुना रहे थे। अब वे यूनानियों या अन्यजातियों को भी सुसमाचार सुना रहे हैं।) *और प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे। तब उन की चर्चा यरूशलेम की कलीसिया के*

सुनने में आई, और उन्हों ने बरनबास को अन्ताकिया भेजा। (यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है।)

वह वहाँ पहुँचकर, और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ; और सब को उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो। क्योंकि वह एक भला मनुष्य था; और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था: और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले। तब वह शाऊल को ढूँढ़ने के लिए तरसुस को चला गया। और जब उससे मिला तो उसे अन्ताकिया में लाया, और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे, और चेले सब से पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।

उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया में आए। उन में से अगबुस नामक एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया, कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा, और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा। तब चेलों ने ठहराया, कि हर एक अपनी अपनी पूंजी के अनुसार यहूदिया में रहने वाले भाइयों की सेवा के लिए कुछ भेजे। और उन्हों ने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया।

यरूशलेम: एक ही जाति के विश्वासी।
यहाँ दो कलीसियाएँ हैं। पहली, एक ही जाति के विश्वासियों से बनी यरूशलेम की कलीसिया। लगभग हर कोई यहूदी मसीही है। कलीसिया ऐसी ही थी। अब, यहाँ मेरे पीछे चलते रहें। इसकी स्थापना प्रेरितों के काम 2 में, पवित्र आत्मा के उतरने पर कलीसिया के प्रमुख अगुवों, अर्थात् प्रेरित पतरस एवं अन्य चेलों द्वारा की गई थी। प्रेरितों के काम की पुस्तक में अभी तक हमने देखा कि यह कलीसिया यहूदियों के बीच मिशन का केन्द्र थी, एक बहुत बड़ी कीमत पर, याद रखें।

प्रेरितों के काम 7 में स्तिफनुस खड़ा हुआ और यहूदी सरदारों के सामने मसीह की श्रेष्ठता का प्रचार किया। क्या हुआ? उसे पत्थरवाह किया गया। यह यहूदियों के लिए महंगा मिशन था। इसे आपने कुछ सप्ताह पहले देखा था और सताव के कारण कलीसिया तितर–बितर हो गई। आपको प्रेरितों के काम 8:1–4 याद है? स्तिफनुस को पत्थरवाह किए जाने के बाद वे तितर–बितर हो गए और सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।

अन्ताकिया: विविध जातियों के मसीही।
यह हमें प्रेरितों के काम 11:19 की ओर लाता है। अब, इस बीच, यह पतरस/कुरनेलियुस की घटना घटती है। सुसमाचार अब अन्यजातियों में जाने के लिए खुला है। परमेश्वर ने अपनी कलीसिया का हृदय बदल दिया है, इसलिए सताव के कारण यरूशलेम से तितर–बितर हुए ये लोग अन्ताकिया में आते हैं और न केवल यहूदियों को परन्तु अन्यजातियों को भी सुसमाचार सुनाने लगते हैं। अन्ताकिया की कलीसिया विविध जातियों के मसीहियों की कलीसिया बनती है। इसके बारे में हम अगले सप्ताह और अधिक देखेंगे जब हम प्रेरितों के काम 13 पर पहुँचते हैं, परन्तु आप इस कलीसिया के नेतृत्व को देखें, इसमें विविध जातियों के लोग शामिल हैं। केवल यहूदी मसीही ही नहीं है, यद्यपि उनमें से कुछ यहूदी मसीही हैं। आप पहली बार कलीसिया में यहूदियों और अन्यजातियों को एक साथ देखते हैं। यह कलीसिया का वैश्विक प्रसार है।

अब, इससे न चूकें। अन्ताकिया की कलीसिया को कलीसिया के अज्ञात सदस्यों ने स्थापित किया था। क्या आपने प्रेरितों के काम 11:20 को सुना था? *"उनमें से कितने कुप्रुसी और कुरेनी थे,"* उनमें से कुछ। उन्होंने ही अन्ताकिया की कलीसिया को आरम्भ किया था, कुछ लोगों ने। पतरस, याकूब या यूहन्ना ने नहीं, और न ही पौलुस ने। केवल कुछ लोगों ने। सुसमाचार के साथ कुछ लोगों ने; सेमिनारी का प्रशिक्षण नहीं है, कलीसिया स्थापना का अनुभव नहीं है, चेले बनाने की प्रक्रिया को कभी देखा भी नहीं था। उन्होंने केवल

सुसमाचार सुना था, उस पर विश्वास किया था, और अब वे अन्ताकिया में एक कलीसिया शुरू करने जा रहे हैं। एक कलीसिया जो अन्यजातियों के लिए, देशों के लिए मिशन का केन्द्र बनेगी।

प्रेरितों के काम की शेष पुस्तक में हम देखने वाले हैं कि अन्ताकिया की यह कलीसिया प्रेरितों के काम की पुस्तक में सुसमाचार को जातियों में भेजने का स्थान है। इसे कुछ लोगों द्वारा शुरू किया गया था, और यह केवल प्रेरितों के काम की पुस्तक में ही नहीं है, केवल बाइबल में ही नहीं है। आप दूसरी, तीसरी और चौथी सदियों को देखें, मसीही इतिहास के कुछ महानतम प्रचारक इस कलीसिया से आए हैं जैसे; इग्नेशियस, लूसियन और क्रिसोस्टम जैसे व्यक्ति। उन सबने अन्ताकिया में प्रचार किया। क्या यह अच्छी बात नहीं है?

यह अन्यजातियों के लिए मिशन का केन्द्र था, जिसकी स्थापना कलीसिया के कुछ अज्ञात सदस्यों द्वारा की गई थी, और इससे न चूकें: इस कलीसिया की शुरूआत सताव के कारण हुई थी। स्तिफनुस के पत्थराव के लिए परमेश्वर की स्तुति हो। दिल की धड़कन रूकने तक पत्थरों की चोट सहने वाले दास के लिए परमेश्वर की स्तुति हो। मैं प्रेरितों के काम 7 और 8 में कलीसिया के डर की केवल कल्पना ही कर सकता हूँ। "क्या हो रहा है? परमेश्वर कहाँ है? हमारा बचाने वाला कहाँ है? अभी उन्होंने स्तिफनुस को पत्थरवाह किया है, सब कुछ गलत हो रहा है। हम सब बिखर रहे हैं। सब कुछ बदल गया है। कुछ भी पहले जैसा नहीं रहा। हे परमेश्वर, यह सब क्या है?"

परमेश्वर अच्छी तरह जानता था कि वह क्या कर रहा है, और स्तिफनुस को पत्थरवाह किए जाने के कारण, उसके बाद से क्या हो रहा है? प्रेरितों के काम 9, सुसमाचार का सबसे बड़ा दुश्मन शाऊल जो स्तिफनुस को पत्थरवाह करते समय वहीं था, वह अब अन्यजातियों सुसमाचार का सबसे बड़ा प्रचारक बनने वाला है। अन्ताकिया की कलीसिया, पृथ्वी की छोर तक मिशन के केन्द्र की शुरूआत सताव के कारण होती है। परमेश्वर हमेशा जानता है कि वह क्या कर रहा है।

दो चेले ...

याकूब: मसीह के अनुयायी के रूप में सिर काट दिया गया।
अब हम दो चेलों की ओर आते हैं, प्रेरितों के काम 12:1, *"उस समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कई एक व्यक्तियों को दुख देने के लिए उन पर हाथ डाले। उसने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला। और जब उसने देखा, कि यहूदी लोग इससे आनन्दित होते हैं, तो उसने पतरस को भी पकड़ लिया।"* यह सब चौंका देने वाली तेजी से होता है। याकूब, तीन निकटतम चेलों में से एक था। पतरस, याकूब और यूहन्ना कलीसिया के प्रमुख अगुवे थे, और दो पदों के अन्दर ही याकूब चला जाता है। कोई स्पष्टीकरण नहीं; कोई टिप्पणी नहीं; कोई श्रद्धांजलि नहीं। कुछ नहीं। मसीह के अनुयायी के रूप में याकूब का सिर काट दिया जाता है, और लूका आगे बढ़ता रहता है। वह पतरस की ओर आता है।

पतरस: मसीह के अनुयायी के रूप में बचा लिया गया।
"वे दिन अखमीरी रोटी के दिन थे।" पद 4 कहता है, *"और उसने उसे पकड़ के बन्दीगृह में डाला, और रखवाली के लिए, चार चार सिपाहियों के चार पहरों में रखा: इस मनसा से कि फसह के बाद उसे लोगों के सामने लाए। सो बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके लिए लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी।"*

अब इसे सुनें, *"और जब हेरोदेस उसे उनके सामने लाने को था, तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बन्धा हुआ, दो सिपाहियों के बीच में सो रहा था..."* मुझे यह पसन्द है। अगले दिन पतरस के साथ भी वही होने

वाला है जो याकूब के साथ हुआ था, उसका सिर कटने वाला है, और वह सो रहा है। यह परमेश्वर की शान्ति है। *"और पहरूए द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे।"*

"तो देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआः और उस कोठरी में ज्योति चमकीः और उसने पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे जगाया" मुझे यह अच्छा लगता है। पतरस जंजीरों से बँधा हुआ सो रहा है और एक स्वर्गदूत प्रकट होता है, ज्योति चमकती है, बन्दीगृह में चमकीली रोशनी के साथ विजयी प्रवेश। पतरस झपकी ले रहा है, सो रहा है।

अतः, स्वर्गदूत उसकी पसली पर मारकर उसे जगाता है और कहता है, "पतरस, उठ।" *"और उसके हाथ से जंजीरें खुलकर गिर पड़ीं। तब स्वर्गदूत ने उस से कहा; कमर बाँध, और अपने जूते पहन लेः उस ने वैसा ही किया, फिर उस ने उस से कहा; अपना वस्त्र पहनकर मेरे पीछे हो ले।"* जैसे, "नंगा होकर मत जा, पतरस, कपड़े पहन ले।" और उसने वैसा ही किया। आप इसकी कल्पना कर सकते हैं।

> *वह निकलकर उसके पीछे हो लिया; परन्तु यह न जानता था, कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह सचमुच है, वरन् यह समझा, कि मैं दर्शन देख रहा हूँ। तब वे पहले और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुँचे, जो नगर की ओर है; वह उनके लिए आप से आप खुल गयाः और वे निकलकर एक ही गली होकर गए, इतने में स्वर्गदूत उसे छोड़कर चला गया।*

मुझे पद 11 पसन्द है, *"तब पतरस ने सचेत होकर कहा..."* इसीलिए हम सब पतरस को चाहते हैं। वह बहुत धीमा है। मेरा मतलब है, आपको अभी स्वर्गदूत ने जगाया है, कपड़े पहनने के लिए कहा है, पहरेदारों के सामने से ले गया है, आपके सामने दरवाजे अपने आप खुले हैं और आपको बन्दीगृह से बाहर गली में पहुँचा दिया है। तब पतरस सचेत हुआ और उसे यह अहसास हुआ कि मैं बन्दीगृह से बाहर हूँ। *"अब मैं ने सच जान लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया, और यहूदियों की सारी आशा तोड़ दी।"*

आगे यह और बेहतर होता है। पद 12, *"और यह सोचकर, वह उस यूहन्ना की माता मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है; वहाँ बहुत लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे। जब उसने फाटक की खिड़की खटखटाई; तो रूदे नाम एक दासी सुनने को आई। और पतरस का शब्द पहचानकर, उसने आनन्द के मारे फाटक न खोला; परन्तु दौड़कर भीतर गई, और बताया कि पतरस द्वार पर खड़ा है।"* यदि आप पतरस हैं, अभी आप जेल से फरार हुए हैं। निश्चित रूप से, हर कोई आप को खोज रहा है, आपके पीछे दौड़ रहा है, और आप विश्वासियों के घर पर आते हैं, और वे आपको बाहर छोड़ देते हैं।

अतः, रूदे अन्दर जाकर सूचना देती है कि पतरस द्वार पर खड़ा है। *"उन्होंने उससे कहा; तू पागल है।"* "चुप रह, रूदे, हम पतरस के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।" *"परन्तु वह दृढ़ता से बोली, कि ऐसा ही हैः तब उन्होंने कहा, उसका स्वर्गदूत होगा।"* रूदे, क्या तुम चुप रहोगी। हम पतरस को जेल से छुड़ाना चाहते हैं, और तुम हमारी प्रार्थनाओं में बाधा डाल रही हो।" इस बीच, *"पतरस खटखटाता ही रहाः सो उन्होंने खिड़की खोली, और उसे देखकर चकित हो गए।"* उनमें शोरगुल होने लगता है। *"तब उसने उन्हें हाथ से सैन किया, कि चुप रहें; और उनको बताया, कि प्रभु किस रीति से मुझे बन्दीगृह से निकाल लाया हैः फिर कहा, कि याकूब और भाइयों को यह बात कह देना; तब निकलकर दूसरी जगह चला गया।"*

"भोर को सिपाहियों में बड़ी हलचल होने लगी, कि पतरस क्या हुआ। जब हेरोदेस ने उसकी खोज की, और न पाया; तो पहरूओं की जाँच करके आज्ञा दी कि वे मार डाले जाएँ; और वह यहूदिया को छोड़कर कैसरिया में जाकर रहने लगा।"

मसीह के अनुयायी के रूप में याकूब का सिर काट दिया गया; मसीह के अनुयायी के रूप में पतरस बचा लिया गया। इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं है कि ऐसा क्यों हुआ कि एक भक्त प्रेरित मारा गया और एक भक्त प्रेरित जीवित है। हम उस पर वापस लौटेंगे। पहले कहानी को समाप्त करें।

दो ईश्वर ...

> *हेरोदेस सूर और सैदा के लोगों से बहुत अप्रसन्न था; सो वे एक चित्त होकर उसके पास आए और बलास्तुस को, जो राजा का एक कर्मचारी था, मनाकर मेल करना चाहा; क्योंकि राजा के देश से उनके देश का पालन–पोषण होता था। और ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहनकर सिंहासन पर बैठा; और उनको व्याख्यान देने लगा। और लोग पुकार उठे, कि यह तो मनुष्य का नहीं परमेश्वर का शब्द है। उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा नहीं की और वह कीड़े पड़के मर गया। परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।*

हेरोदेसः वह मनुष्य जो परमेश्वर के रूप में स्तुति चाहता था।
दो परमेश्वर, और हेरोदेस के मामले में स्पष्टतः, मेरा मतलब अलंकारिक रूप से है। हेरोदेस वह व्यक्ति था जो परमेश्वर के रूप में स्तुति चाहता था। उसे मनुष्यों की प्रशंसा पसन्द थी, और जब उसने देखा कि याकूब का सिर काटने से यहूदी प्रसन्न हुए तो मनुष्यों की प्रशंसा पाने के लिए उसने पतरस को भी बन्दीगृह में डाल दिया, और उनकी इस प्रशंसा का आनन्द लेता है जब वे कहते हैं, *"यह तो मनुष्य का नहीं परमेश्वर का शब्द है।"* हेरोदेस पागल था। वह पागल था क्योंकि खुद की बड़ाई करना और यह सोचना पागलपन ही तो है कि आपका स्तर ब्रह्माण्ड के सृष्टिकर्ता के आस–पास है।

परमेश्वरः वह परमेश्वर जो अपनी स्तुति को मनुष्यों के साथ नहीं बाँटता है।
मैं चाहता हूँ आप इसे देखें कि परमेश्वर अपनी स्तुति को मनुष्यों के साथ नहीं बाँटता है। इसे लिख लेंः परमेश्वर अपनी महिमा कभी भी किसी दूसरे को नहीं देगा। वह कुछ समय के लिए पुरूषों और स्त्रियों को घमण्ड करने दे सकता है, परन्तु वह उन्हें नीचे ले आएगा। इसे सुनेंः परमेश्वर हमेशा पुरूषों और स्त्रियों के घमण्ड को तोड़ देगा। इस परमेश्वर के सामने घमण्ड न करें।

दो निष्कर्ष ...

हमारी जिम्मेदारी अत्यावश्यक है।
अतः, कहानी यही है। अब, हम निष्कर्ष क्या निकालें? इसे हम कैसे समझें? इन सबका हमारे जीवनों के लिए क्या मतलब है? इन सबका हमारी कलीसिया के लिए क्या मतलब है? हमारे लिए इसका क्या मतलब है? दो निष्कर्षः एक, हमारी जिम्मेदारी अत्यावश्यक है। इससे मेरा मतलब यह है। पहला, यह अविश्वासियों के लिए अत्यावश्यक है। उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए जिसने यीशु मसीह पर विश्वास नहीं किया है, अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह पर विश्वास नहीं किया है, आपके लिए इस पूरी कहानी का मुख्य बिन्दू यह है कि आप आज ही, अभी सुसमाचार पर विश्वास करें।

वह अनुभव प्राप्त करें जो प्रेरितों के काम 10 में कुरनेलियुस ने पाया था। वह अनुभव प्राप्त करें जो प्रेरितों के काम 11 में अन्ताकिया के अन्यजातियों ने पाया था। मसीह पर विश्वास करें। आपके जीवन की घटनाओं को परमेश्वर ने ही संचालित किया है कि आप इसे सुनें। यीशु ने आपकी मौत को अपने ऊपर ले लिया।

वह आपके पापों के लिए क्रूस पर मरा, और वह पाप के ऊपर जय पाकर जी उठा है, ताकि जब आप उस पर विश्वास करें तो परमेश्वर के साथ आपका मेल–मिलाप हो और आप उसे जानें और सदा–सर्वदा तक उसका आनन्द लें। यह संसार का सबसे अच्छा समाचार है।

सुसमाचार पर विश्वास करें। अपने पाप से और अपने आप से फिरें। यही प्रेरितों के काम 11:21 का वचन है। वे प्रभु की ओर फिरे। अपने पाप से फिरें। अपने आप से फिरें और प्रभु के रूप में मसीह पर भरोसा रखें। राजा के रूप में मसीह पर भरोसा रखें। पिछले 2,000 वर्षों से लोग जो करते आ रहे हैं वह करें और अपने पापों से उद्धार पाएँ। यदि आपने अपने उद्धार के लिए कभी मसीह पर विश्वास नहीं किया है तो इस परिच्छेद का आपके लिए यही मतलब है।

अतः, अविश्वासियो, सुसमाचार पर विश्वास करो। फिर, विश्वासियो, जातियों में सुसमाचार का प्रचार करो। अविश्वासियो, आज बदलो। विश्वासियो, आज बदलो। मैं उद्धार के लिए बदलने की बात नहीं कर रहा हूँ, परन्तु देखो, पतरस के जीवन में क्या हुआ था। देखो, प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रमुख बिन्दू पर क्या हुआ था, और उसे अपने दिल में होने दो। परमेश्वर से कहो कि वह उन हजारों जातियों और देशों के लिए आपके दिल को जकड़ ले जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना है। जब चारों ओर के सुसमाचार से वंचित संसार की बात हो तो एक पल भी ठण्डा और अविचलित मसीही जीवन बिताने से इन्कार कर दें। दिलों को नरम करें। परमेश्वर से कहें कि वह अपना दिल आपको दे।

इसे देखें: सुसमाचार एक दैवीय सन्देश है। इसमें दैवीय सामर्थ है, और परमेश्वर की स्तुति हो, उसने मसीह में आपके विश्वास के लिए कार्य किया है। यह सब परमेश्वर ने किया है। वही उस पुरूष या स्त्री को लाया जिसे आप जानते थे, शायद नहीं जानते थे, शायद परिवार में कोई होगा, या कोई मित्र, कोई व्यक्ति जिससे आप पहली बार मिले थे, कोई व्यक्ति जिसकी बात आप सुन रहे थे, वह चाहे जो भी हो, परमेश्वर ने वह किया था। परमेश्वर किसी को आपके पास लाया ताकि आप सुसमाचार सुन सकें। आपने मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान के बारे में सुना और विश्वास किया और आपका जीवन पूरी तरह बदल गया। यह ऐसा सौभाग्य है जो डेढ़ अरब लोगों को पहले कभी नहीं मिला है।

इसे महसूस करें: कि सुसमाचार अच्छा है। आप जानते हैं यह अच्छा है। हम जानते हैं यह अच्छा है। यह एक दैवीय सन्देश है, परन्तु इसके लिए मानवीय सन्देशवाहक की जरूरत है। प्रेरितों के काम 10 और 11 का यही मतलब है। यह सब हो रहा है, परन्तु इन दर्शनों में स्वर्गदूत पर ध्यान दें। स्वर्गदूत कुरनेलियुस के सामने प्रकट होता है। स्वर्गदूत उसे सुसमाचार नहीं सुनाता है। परमेश्वर ने सुसमाचार सुनाने का उत्तरदायित्व, अवसर और सौभाग्य स्वर्गदूतों को नहीं दिया है। उसने वह उत्तरदायित्व, अवसर और सौभाग्य अपने लोगों को दिया है, और इस सुसमाचार के लिए हमेशा एक मानवीय सन्देशवाहक की जरूरत होती है।

संसार भर में 6,000 से अधिक जातियाँ हैं जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना है, और स्वप्न और दर्शन देखे जा रहे हैं, परन्तु मनुष्यों के उनके पास जाने तक सुसमाचार उन तक नहीं पहुँचेगा। परमेश्वर हमारे दिलों को तैयार करने के लिए हर प्रकार के कार्य कर रहा है। हम उस पर आएँगे।

सुसमाचार के लिए मानवीय सन्देशवाहक की जरूरत है। हम इसे जानते हैं। रोमियों 10:13–15, *"जिसकी नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें?"* वे तब तक नहीं सुनेंगे जब तक कि हम उनके पास न जाएँ। इसलिए, हम आराम से बैठकर यह नहीं सोच सकते हैं, "ठीक है, कोई इसे करेगा। इसे कोई भी कर सकता है।" नहीं, इसे करने के लिए हम परमेश्वर के औजार हैं। हमारी जिम्मेदारी अत्यावश्यक है। उसकी सामर्थ हमारे लिए उपलब्ध है। इस पूरे परिच्छेद में उसकी सामर्थ उसके लोगों के लिए उपलब्ध है। जब हम प्रार्थना करते हैं तो उसकी सामर्थ हमारे लिए उपलब्ध होती है। देखें, कलीसिया कैसे लौ लगाकर

प्रार्थना कर रही है। इसलिए, आइए हम प्रार्थना करें। आइए हम परमेश्वर की सामर्थ के लिए प्रार्थना करें, और जब हम प्रचार करते हैं तो उसकी सामर्थ हमारे लिए उपलब्ध होती है। जब हम इस वचन को बोलते हैं, तो वह इसे आशीष देगा। वह लोगों को मसीह में लाने के लिए इसे आशीष देगा।

उसकी सामर्थ उसके लोगों के लिए उपलब्ध है, और उसकी योजना सब लोगों के लिए है। यही इस पद का बिन्दू है। हर देश और हर जाति में परमेश्वर के लोग हैं। उनमें से कुछ देश और कुछ जातियाँ कठिन लग सकती हैं। वे सुसमाचार के विरोधी प्रतीत हो सकते हैं, परन्तु उन्हें छोड़ न दें। उनमें से प्रत्येक देश में परमेश्वर के लोग हैं, और वह हमें उनके पास भेज रहा है। परमेश्वर यही कर रहा है। पतरस के जीवन में उसने यही किया था। कलीसिया के जीवन में उसने यही किया था। हमारे जीवनों में भी वह यही कर रहा है।

आराम से बैठकर सुसमाचार के अनुग्रह को अपने जीवन में कुलीनता और पक्षपात का माध्यम न बनने दें, जहाँ हर सप्ताह सुसमाचार को अपने अन्दर सोखकर ही हम खुश हैं, संसाधनों को अपने ऊपर खर्च करते हैं, और कलीसिया के कार्यक्रमों को अपनी सुविधा के अनुसार चलाते हैं। नहीं, ऐसा न करें। वह हमें भेज रहा है। पूर्वाग्रह और घमण्ड और पक्षपात और सांस्कृतिक पृथक्ता से मुक्त रहें। वह हमें भेज रहा है, और वह उन्हें तैयार कर रहा है। इसके बारे में सोचें।

यहाँ पर एक पल के लिए मैं थोड़ा अलग हटना चाहता हूँ। मैं इसे निश्चित रूप से नहीं जानता हूँ, परन्तु हमने जो पढ़ा है उसके आधार पर मेरे साथ इसके बारे में सोचें। क्या ऐसा हो सकता है, शायद, क्या ऐसा हो सकता है कि इस समय जब परमेश्वर आपके ह्रदय में एक कार्य कर रहा है, आपके दिलों को सुसमाचार से वंचित लोगों के बीच की आवश्यकता के लिए खोल रहा है और वह कैसे होगा, कौन जानता है। हम सबके जीवनों में यह बिल्कुल अलग तरह से होगा।

क्या आपका ह्रदय जकड़ा हुआ है जहाँ आप कहते हैं, "वास्तव में, आप मुझ से जो भी चाहें, हमसे आप जो भी चाहें?" अतः, जब परमेश्वर हमारे दिलों में इस प्रकार के कार्य को करता है और हमें प्रार्थना करने की, देने की अगुवाई देता है, और जाने की अगुवाई देता है, जब वह हमारे दिलों में ऐसा कार्य कर रहा है, तो क्या ऐसा हो सकता है कि इसी पल, इसी समय, पाकिस्तान में एक व्यक्ति दर्शन देख रहा हो? उसका ह्रदय खुल गया है। एक दिन कोई आएगा, और शायद आप वह पुरूष या स्त्री होंगे जो जाएँगे और बात करेंगे और परमेश्वर आपके दिल और उनके दिल को एक साथ मिलाने के द्वारा इन सुसमाचार से वंचित लोगों में सुसमाचार के प्रवेश के लिए एक द्वार खोलेगा।

परमेश्वर की सर्वोच्चता अबाध है।

क्या ऐसा हो सकता है? हाँ, बिल्कुल, ऐसा हो सकता है। यह दूसरा निष्कर्ष है। परमेश्वर की सर्वोच्चता अबाध है। यह इस पूरे परिच्छेद में है। परमेश्वर रोग और मृत्यु पर सर्वोच्च है। आप उसके सर्वोच्च नेतृत्व को एक ही समय में कुरनेलियुस और पतरस में देखते हैं। अन्ताकिया की कलीसिया को शुरू करने के लिए सताव का प्रयोग करने की उसकी सर्वोच्च योजना। स्वयं राजा हेरोदेस के ऊपर उसका सर्वोच्च शासन। इससे न चूकें। हमारा परमेश्वर संसार के नेताओं को अपने हाथों में रखता है। वे उसके हैं ताकि उसके समय पर उसकी इच्छा को पूरा करें।

जब आप समाचार देखते हैं, और आप देखते हैं कि मिस्र में क्या हो रहा है, और आप देखते हैं कि ट्यूनिशिया में क्या हो रहा है, और आप देखते हैं कि यमन में क्या हो रहा है, और आप देखते हैं कि जॉर्डन में क्या हो रहा है, इसे समझें: इनमें से हर एक बात पर परमेश्वर सर्वोच्च है। इसके बीच में लोग जिम्मेदार हैं, कोई शक नहीं है, परन्तु परमेश्वर इसके ऊपर सर्वोच्च है। वह सारी बातों को अपने हाथों में रखता है। वह प्रत्येक नेता को अपने हाथों में रखता है, और वह प्रत्येक भावी नेता को अपने हाथों में रखता

है। इसका मतलब यह है कि हमारा जीवन उसके हाथों में है। हम में से प्रत्येक का जीवन, और हमारे जीवनों की छोटी से छोटी बातें।

अब, बात यह है। मैं नहीं जानता कि हमारे जीवन के लिए उसका क्या मतलब है। मैं नहीं जानता कि मेरे जीवन के लिए उसका क्या मतलब है। मैं नहीं जानता कि वह आपके रास्ते में क्या लाएगा, और मैं नहीं जानता कि वह मेरे रास्ते में क्या लाएगा। शायद मस्तिष्क में रसौली, या शायद नहीं। शायद कैन्सर, शायद नहीं। हो सकता है आपका रास्ता आसान हो; या आपका रास्ता कठिन हो सकता है। शायद आपका रास्ता आरामदायक होगा; शायद आपका रास्ता ऊबड़–खाबड़ होगा।

याकूब का सिर काट दिया गया; पतरस बचा लिया गया। परमेश्वर याकूब को भी बचा सकता था? वह सम्पूर्ण तस्वीर पर सर्वोच्च है। कोई स्पष्टीकरण नहीं कि एक व्यक्ति के साथ ऐसा क्यों होता है और दूसरे व्यक्ति के साथ कुछ और क्यों होता है। बहुत कुछ है जिसे हम नहीं जानते हैं, परन्तु एक बात हम जानते हैं, चाहे शान्ति हो या सताव, चाहे स्वास्थ्य हो या बीमारी, चाहे जीवन हो या मृत्यु, परमेश्वर हमारी भलाई ही करेगा। इसे हम निश्चित रूप से जानते हैं।

रोमियों 8:28, *"जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं।"* भजन 31:15, आपका समय उसके हाथों में है। यह एक वायदा है। प्रकाशितवाक्य 21, एक दिन आ रहा है जब कोई विलाप या रोना या दर्द नहीं होगा, और वह हमारी आँखों से सारे आँसुओं को पोंछ देगा। इस वायदे की गारण्टी है।

वह हमारी भलाई करेगा, और पृथ्वी के सारे लोगों के बीच, पृथ्वी की प्रत्येक जाति के बीच, वह अपनी महिमा दिखाएगा। संसार उसके हाथों में है, और हमारा जीवन उसके हाथों में है। इसलिए, आइए हम इसका अंगीकार करें। आइए हम अपने आप को उसके आगे डाल दें और कहें, "आप हमारे जीवनों में जो भी करना चाहें, आप हमारे परिवारों में जो भी करना चाहें, आप हमारी कलीसिया में जो भी करना चाहें, उसे इस ग्रह पर हर एक जाति में अपनी महिमा और अपने सुसमाचार के प्रसार के लिए करें। यहाँ पर हमारा यही लक्ष्य हैं, और हम अपने जीवनों से भी बढ़कर आपकी महिमा चाहते हैं।"

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction. For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By David Platt. © David Platt & Radical. Website: Radical.net